# जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

## पुरुषवादी सामाजिक वृत्ति को चुनौती

पुरुषवादी सामाजिक वृत्ति को चुनौती देने के लिए तथा संसार में संतुलन कायम करने के लिए सशक्त महिलाओं की आवश्यकता है। चूंकि दुनिया के लोग सभी मान्यताओं को प्राचीन धार्मिक प्रवृत्तियों के आधार पर ही देखते हैं, तो आइए हम वहीं से शुरु करते हैं।

यदि नारी की गरिमा तथा उसकी सम्पूर्णता को लें तो सबसे पहले हमें नारी तथा पुरुष का सम्पूर्ण अर्धनारीश्वर अथवा चतुर्भुज के रूप में दिखाया गया स्वरूप, जिसमें स्त्री तथा पुरुष के प्रति समान भाव को दर्शाया गया को देखना चाहिए। इस सोच को चुनौती देने के लिए कि स्त्री, पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चलने तथा समानता के अधिकार व किसी भी प्रकार पुरुष से कम है।

## एक वैज्ञानिक आधार

हमारे अन्दर दो मस्तिष्क हैं, एक दायां तथा दूसरा बायां। दायां मस्तिष्क स्त्री लिंग का सूचक है तथा बायां मस्तिष्क पुरुष लिंग का सूचक है। पुरुष मस्तिष्क या बायें भाग को तार्किक, साहसी, निर्णायक माना जाता है। वहीं दायें भाग को भावनात्मक व काल्पनिक माना जाता है। दोनों का संतुलन एक सम्पूर्ण मानव को दर्शाता है। अतः यह एक आत्मा को दर्शाता है। आज समाज में इसे संतुलित करने हेतु लोगों ने बायें तथा दायें दोनों मस्तिष्क या स्त्री तथा पुरुष की शादी को मान्यता देनी शुरु की। और जब यह बढ़ना शुरु हुआ तो जन्म से ही लड़के या लड़की के अन्दर यह आधुनिक सोच भी डाल दी गई कि तुम पुरुष हो तो तुम्हें कैसे होना चाहिए और तुम स्त्री हो तो तुम्हें कैसे होना चाहिए। आज यही मान्यता समाज में प्रचलित होती जा रही है। इसका परिणाम यह हुआ कि जब कोई बच्ची या बहन अपने भाई को थप्पड़ मार दे या डांट लगा दे तो माता-पिता ही उस बहन को उसी झुकाव से कहेंगे कि आप स्त्री हो और स्त्री को भावुक तथा सहनशील होना चाहिए तथा उसे अपने भाई के साथ शालीनता से पेश आना चाहिए और बच्चे को कहेंगे आप पुरुष हो तो आपको साहसी होना चाहिए। इसी सोच ने आज पुरुष को पुरुषत्व का भान तथा स्त्री को पूर्णतः नारीत्व का भान दिलाया है। इस मानसिकता के कारण आज विकास एकतरफा है।

**कहा जाता है, "नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता", अर्थात् नारी की जहाँ पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। यह एक आधार है या सिर्फ धार्मिक नारा है या एक सर्वविदित कथन है? इस भावना को उजागर करने पर प्रकाश डाला जाए तो शायद कितनी ही पुस्तकें लिखनी पड़ जाएं, फिर भी नारी की महिमा लिखी नहीं जा सकती।**

## धर्मशास्त्रों में नारी पर कटाक्ष

सभी धर्मशास्त्रों में नारियों के प्रति घृणा की भावना प्रदर्शित की गई है, वही पुरुषों के लिए कोई कटाक्ष नहीं है। महर्षियों तथा मनीषियों द्वारा लाक्षणिक अथवा सांकेतिक भाषा में प्रकट किए गए कुछ सूक्ष्म आध्यात्मिक सत्यों को टीकाकारों ने तोड़ मरोड़कर प्रस्तुत किया है। और प्रायः यह खण्डित सत्य समाज में धार्मिक मनोवृत्ति एवं मान्यताओं का स्वरूप ले लेते हैं।

कुछ उदाहरणों के द्वारा हम आपको स्पष्ट करते हैं। जैसे आत्मा को सर्वोच्च सत्ता की पत्नी के रूप में माना गया तदनुसार आत्मा को सुहागिन कहा जाता है। इस बात को टीकाकारों ने इस प्रकार से लिया कि जब तक कोई नारी किसी पुरुष से विवाह नहीं कर लेती है तब तक वह सुहागिन नहीं बन सकती है। उन आत्माओं की शास्त्रों में चर्चा की गई है, जिन्होंने स्वयं को पूर्णतः सर्वोच्च सत्ता पर निःस्वार्थ भाव से अर्पित कर दिया। इसी प्रकार एक महिला से आशा की जाती है कि वह खुद को अपने पति के लिए पूर्णतः समर्पित कर दे, उसके किसी भी व्यवहार के प्रति कोई प्रश्न आदि न पूछे।

## एक संस्था इस पर कर रही है कार्य

इन उपरोक्त मामलों पर रोकथाम के लिए एक संस्था, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पूर्णतः प्रयासरत है। यहाँ महिला सशक्तिकरण तथा उन्हें समाज के सभी क्षेत्रों में कदम रखने का एक उचित अवसर प्रदान किया जाता है क्योंकि महिलाओं के उत्थान में परमात्म शक्ति का साथ होना अति आवश्यक है। उनका आत्मबल, गौरव तथा खोया हुआ सम्मान, परमात्मा पिता ही दिला सकते हैं। जब नारी जगत जननी बन जग का उत्थान करने के लिए अपना सब कुछ अर्पण कर देगी तो स्वर्ग की ओर ले जाने के लिए ही मार्ग प्रशस्त करेगी।

# 'नारी' सभ्यता और संस्कृति की शिक्षिका

**आज के पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को अपने परिवार एवं समाज में दबाया गया तथा उनका शारीरिक अथवा मानसिक शोषण किया गया है। इस कारण आज के समय में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार सम्मान और स्वतन्त्रता देने से ही महिला सशक्तिकरण होगा।**

हमारे देश में आधी आबादी महिलाओं की है। तो अपने राष्ट्र को मज़बूत बनाने के लिए हमें अपने देश के महिला वर्ग को सशक्त बनाना होगा। पुरुष प्रधान देश यह नारा लगाता है कि नारी नर्क का द्वार है। जबकि सच्चाई यह है कि नारी ही पुरुष की जन्मदाता है। उसे अच्छे संस्कार, सभ्यता और अच्छी तहज़ीब सिखाने में उसकी प्रथम शिक्षिका होती है। अगर नारी सशक्त बनती है तो पूरा परिवार, समाज और राष्ट्र मज़बूत बनता है।

समय इतनी रफ्तार से आगे बढ़ रहा है और ऐसे में हमारे देश की महिलाएं भी अब कई क्षेत्रों में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर बहुत इमानदारी और साहस से कार्य कर रही हैं। महिला सशक्तिकरण में वह ताकत है कि वो समाज और राष्ट्र को ऊंचाइयों के शिखर पर पहुंचा सकती है।

अभी बहुत सी महिलाएं चुस्ती और स्फूर्ति से राष्ट्र निर्माण हेतु कर्म क्षेत्र पर कार्य कर रही हैं। हमारे देश में गणना का आधा वर्ग महिलाओं का है। तो अगर हमें अपने देश को और आगे बढ़ाना है व सशक्त करना है तो हमें समाज के हर हिस्से जैसे कि पिछड़े हुए गांवों और कस्बों में महिलाओं को शिक्षित तथा जागरुक कर उन्हें अपने अधिकारों के बारे में बताना है।

महिला सशक्तिकरण से ही भारत विश्वगुरू की ताकत के रूप में विख्यात हो सकेगा। परमपिता शिव बाबा ने आकर नारी को इतना सम्मान दिया कि अपनी संस्था का नाम ब्रह्माकुमारी रखा और माताओं एवं बहनों को ही इस विश्व विद्यालय में आगे से आगे रखा। जब स्वयं परमात्मा ने उनमें विश्वास रखा तथा प्रोत्साहन दिया तो सोचो महिलाओं में कितनी ताकत है जो वो सिर्फ परिवार को ही नहीं, अपितु सारे समाज, राष्ट्र अथवा पूरे विश्व को कलयुगी दरिद्रता से स्वर्ग सतयुगी युग का निर्माण करने में परमात्मा की सहयोगी और साथी होती है।

तो अब समय आ गया है कि महिलाएं अपने अन्दर की ताकत, अपने अन्दर की क्षमता को पहचानें। कौन सा कार्य है, कौन सी ऐसी समस्या है, चाहे छोटी से छोटी घर की या फिर बड़ी से बड़ी कार्य स्थल या समाज की जो वो हल नहीं कर सकती! जिसका साथी हो भगवान, कौन कर सकता है उसका नुकसान। तो हे हमारे देश की महिलाओं! जागो और स्वयं में स्वयं की शक्ति को पहचानो तथा समाज एवं राष्ट्र को मज़बूत बनाओ।

डॉ. वंदना,दिल्ली।

जेपोर-ओडिशा। रोटरी क्लब प्रेसिडेंट तथा प्रसिद्ध उद्योगपति प्रकाश चंद्र नायक को गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु. जयन्ति।

केशोद-गुज.। सेवाकेन्द्र में आने पर डी.वाय.एस.पी. जयवीर गढवी का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए ब्र.कु. रूपा।